

Para 23

Sipara 23 of 30 · 357 Ayahs · Translation: Hindi

Yaseen

28

وَمَا أَنزَلْنَا عَلَىٰ قَوْمِهِۦ مِنۢ بَعْدِهِۦ مِن جُنْدٍ مِّنَ السَّمَاءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِينَ

और हमने उसके मरने के बाद उसकी क्रौम पर उनकी तबाही के लिए न तो आसमान से कोई लशकर उतारा और न हम कभी इतनी सी बात के वास्ते लशकर उतारने वाले थे

29

إِن كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ خُمِدُونَ

वह तो सिर्फ एक चिंघाड़ थी (जो कर दी गयी बस) फिर तो वह फौरन चिरागो सहरी की तरह बुझ के रह गए

30

يَحْسِرَةُ عَلَى الْعِبَادِ مَا يَأْتِيهِمْ مِّن رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ

हाए अफसोस बन्दों के हाल पर कि कभी उनके पास कोई रसूल नहीं आया मगर उन लोगों ने उसके साथ मसखरापन ज़रूर किया

31

أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّنَ الْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ

क्या उन लोगों ने इतना भी ग़ौर नहीं किया कि हमने उनसे पहले कितनी उम्मतों को हलाक कर डाला और वह लोग उनके पास हरगिज़ पलट कर नहीं आ सकते

32

وَإِنْ كُلُّ لُحْمٍ لَّمَّا جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ

(हाँ) अलबत्ता सब के सब इकट्ठा हो कर हमारी बारगाह में हाज़िर किए जाएँगे

33

وَعَايَةُ لَهُمُ الْأَرْضُ الْمَيْتَةُ أَحْيَيْنَاهَا وَأَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَأْكُلُونَ

और उनके (समझने) के लिए मेरी कुदरत की एक निशानी मुर्दा (परती) ज़मीन है कि हमने उसको (पानी से) ज़िन्दा कर दिया और हम ही ने उससे दाना निकाला तो उसे ये लोग खाया करते हैं

34

وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّاتٍ ۖ مِّنْ نَّخِيلٍ ۖ وَأَعْنَابٍ ۖ وَفَجَّرْنَا فِيهَا مِنَ الْعُيُونِ

और हम ही ने ज़मीन में छुहारों और अंगूरों के बाग़ लगाए और हमही ने उसमें पानी के चशमें जारी किए

35

لِيَأْكُلُوا ۖ مِنْ ثَمَرِهِ ۖ وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ ۖ أَفَلَا يَشْكُرُونَ

ताकि लोग उनके फल खाएँ और कुछ उनके हाथों ने उसे नहीं बनाया (बल्कि खुदा ने) तो क्या ये लोग (इस पर भी) शुक्र नहीं करते

36

سُبْحَنَ الَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنبِتُ الْأَرْضُ وَمِنْ أَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ

वह (हर ऐब से) पाक साफ़ है जिसने ज़मीन से उगने वाली चीज़ों और खुद उन लोगों के और उन चीज़ों के जिनकी उन्हें ख़बर नहीं सबके जोड़े पैदा किए

37

وَأَيَّاهُ ۖ لَهُمُ اللَّيْلُ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَإِذَا هُمْ مُظْلِمُونَ

और मेरी कुदरत की एक निशानी रात है जिससे हम दिन को खींच कर निकाल लेते (जाएल कर देते) हैं तो उस वक्त ये लोग अंधेरे में रह जाते हैं

38

وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ ۖ لَّهَا ۖ ذَلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ

और (एक निशानी) आफ़ताब है जो अपने एक ठिकाने पर चल रहा है ये (सबसे) ग़ालिब वाक़िफ़ (खुदा) का (बाँदा हुआ) अन्दाज़ा है

39

وَالْقَمَرَ قَدَرْنَاهُ مَنَازِلَ حَتَّىٰ عَادَ كَالْعُرْجُونِ الْقَدِيمِ

और हमने चाँद के लिए मंज़िलें मुक़र्रर कर दी हैं यहाँ तक कि हिर फिर के (आख़िर माह में) खज़ूर की पुरानी टहनी का सा (पतला टेढ़ा) हो जाता है

لَا الشَّمْسُ يَنْبَغِي لَهَا أَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا اللَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۚ وَكُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ

न तो आफताब ही से ये बन पड़ता है कि वह माहताब को जा ले और न रात ही दिन से आगे बढ़ सकती है (चाँद, सूरज, सितारे) हर एक अपने-अपने आसमान (मदार) में चक्कर लगा रहे हैं

وَأَيُّةٌ لَهُمْ أَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلِكِ الْمَشْحُونِ

और उनके लिए (मेरी कुदरत) की एक निशानी ये है कि उनके बुर्जुगों को (नूह की) भरी हुई कश्ती में सवार किया

وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِنْ مِثْلِهِ مَا يَرْكَبُونَ

और उस कश्ती के मिसल उन लोगों के वास्ते भी वह चीज़े (कश्तियाँ) जहाज़ पैदा कर दी

وَإِنْ نَشَأْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُونَ

जिन पर ये लोग सवार हुआ करते हैं और अगर हम चाहें तो उन सब लोगों को डुबा मारें फिर न कोई उन का फरियाद रस होगा और न वह लोग छुटकारा ही पा सकते हैं

إِلَّا رَحْمَةً مِنَّا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ۚ

मगर हमारी मेहरबानी से और चूँकि एक (खास) वक्त तक (उनको) चैन करने देना (मंज़ूर) है

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا ۚ مَا بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ

और जब उन कुफ़्फ़ार से कहा जाता है कि इस (अज़ाब से) बचो (हर वक्त तुम्हारे साथ-साथ) तुम्हारे सामने और तुम्हारे पीछे (मौजूद) है ताकि तुम पर रहम किया जाए

وَمَا تَأْتِيهِمْ مِنْ ءَايَةٍ ۚ مِنْ ءَايَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ

(तो परवाह नहीं करते) और उनकी हालत ये है कि जब उनके परवरदिगार की निशानियों में से कोई निशानी उनके पास आयी तो ये लोग मुँह मोड़े बग़ैर कभी नहीं रहे

47

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ أَنْفِقُوا؟ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا؟ لِلَّذِينَ ءَامَنُوا؟ أَنْطَعِمُ
مَنْ لَوْ يَشَاءُ اللَّهُ أَطْعَمَهُ؟ إِنَّ أَنْتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ؟

और जब उन (कुफ़ार) से कहा जाता है कि (माले दुनिया से) जो खुदा ने तुम्हें दिया है उसमें से कुछ (खुदा की राह में भी) खर्च करो तो (ये) कुफ़ार ईमानवालों से कहते हैं कि भला हम उस शख्स को खिलाएँ जिसे (तुम्हारे ख्याल के मुवाफ़िक़) खुदा चाहता तो उसको खुद खिलाता कि तुम लोग बस सरीही गुमराही में (पड़े हुए) हो

48

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ

और कहते हैं कि (भला) अगर तुम लोग (अपने दावे में सच्चे हो) तो आखिर ये (क़यामत का) वायदा कब पूरा होगा

49

مَا يَنْظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً؟ وَحِدَةً؟ تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُونَ

(ऐ रसूल) ये लोग एक सख्त चिंघाड़ (सूर) के मुनतज़िर हैं जो उन्हें (उस वक्त) ले डालेगी

50

فَلَا يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً؟ وَلَا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ

जब ये लोग बाहम झगड़ रहे होंगे फिर न तो ये लोग वसीयत ही करने पायेंगे और न अपने लड़के बालों ही की तरफ लौट कर जा सकेंगे

51

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَإِذَا هُمْ مِنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يَنْسِلُونَ

और फिर (जब दोबारा) सूर फूँका जाएगा तो उसी दम ये सब लोग (अपनी-अपनी) क़ब्रों से (निकल-निकल के) अपने परवरदिगार की बारगाह की तरफ चल खड़े होंगे

52

قَالُوا؟ يَوْمَلْنَا مَنْ؟ بَعَثْنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا؟؟ هَذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمَنُ وَصَدَقَ
الْمُرْسَلُونَ

और (हैरान होकर) कहेंगे हाए अफसोस हम तो पहले सो रहे थे हमें ख्वाबगाह से किसने उठाया (जवाब आएगा) कि ये वही (क़यामत का) दिन है जिसका खुदा ने (भी) वायदा किया था

إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً ۙ وَحِدَةً ۙ فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ ۙ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ

और पैग़म्बरों ने भी सच कहा था (क़यामत तो) बस एक सख्त चिंघाड़ होगी फिर एका एकी ये लोग सब के सब हमारे हुज़ूर में हाज़िर किए जाएँगे

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ ۙ شَيْئًا ۙ وَلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ

फिर आज (क़यामत के दिन) किसी शख्स पर कुछ भी ज़ुल्म न होगा और तुम लोगों को तो उसी का बदला दिया जाएगा जो तुम लोग (दुनिया में) किया करते थे

إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغُلٍ ۙ فُكْهُونَ

बेहश्त के रहने वाले आज (रोजे क़यामत) एक न एक मशग़ले में जी बहला रहे हैं

هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلِّ عَلَى الْأَرَائِكِ مُتَكُونَ

वह अपनी बीवियों के साथ (ठन्डी) छाँव में तकिया लगाए तख्तों पर (चैन से) बैठे हुए हैं

لَهُمْ فِيهَا فُكْهَةٌ ۙ وَلَهُمْ مَّا يَدْعُونَ

बिहश्त में उनके लिए (ताज़ा) मेवे (तैयार) हैं और जो वह चाहें उनके लिए (हाज़िर) है

سَلَامٌ ۙ قَوْلًا ۙ مِّن رَّبِّ ۙ رَحِيمٍ ۙ

मेहरबान परवरदिगार की तरफ से सलाम का पैग़ाम आएगा

وَأَمْتَرُوا ۙ الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ

और (एक आवाज़ आएगी कि) ऐ गुनाहगारों तुम लोग (इनसे) अलग हो जाओ

60

﴿ أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يَبْنَىءَآءَآءَمَ أَن لَّا تَعْبُدُوا ﴾ الشَّيْطٰنَ ﴿ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴾

ऐ आदम की औलाद क्या मैंने तुम्हारे पास ये हुकम नहीं भेजा था कि (खबरदार) शैतान की परसतिश न करना वह यक्रीनी तुम्हारा खुल्लम खुल्ला दुश्मन है

61

وَأَنۢ أَعْبُدُونِي ۚ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ۚ

और ये कि (देखो) सिर्फ मेरी इबादत करना यही (नजात की) सीधी राह है

62

وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيرًا ۖ أَفَلَمْ تَكُونُوا ۚ تَعْقِلُونَ

और (बावजूद इसके) उसने तुममें से बहुतेरों को गुमराह कर छोड़ा तो क्या तुम (इतना भी) नहीं समझते थे

63

هٰذِهِ ۚ جَهَنَّمُ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ

ये वही जहन्नुम है जिसका तुमसे वायदा किया गया था

64

أَصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ

तो अब चूँकि तुम कुफ़र करते थे इस वजह से आज इसमें (चुपके से) चले जाओ

65

الْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَىٰ أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيهِمْ وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا ۚ يَكْسِبُونَ

आज हम उनके मुँह पर मुहर लगा देंगे और (जो) कारसतानियाँ ये लोग दुनिया में कर रहे थे खुद उनके हाथ हमको बता देंगे और उनके पाँव गवाही देंगे

66

وَلَوْ نَشَاءُ لَطَمَسْنَا عَلَىٰ أَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا ۚ الصِّرَاطَ فَأَنَّىٰ يُبْصِرُونَ

और अगर हम चाहें तो उनकी आँखों पर झाड़ू फेर दें तो ये लोग राह को पड़े चक्कर लगाते ढूँढते फिरें मगर कहाँ देख पाएँगे

وَلَوْ نَشَاءُ لَمَسَخْنَهُمْ عَلَىٰ مَكَانَتِهِمْ فَمَا أَسْتَطْعُوا ۚ مُضِيًّا ۚ وَلَا يَرْجِعُونَ

और अगर हम चाहे तो जहाँ ये हैं (वहीं) उनकी सूरतें बदल (करके) (पत्थर मिट्टी बना) दें फिर न तो उनमें आगे जाने का काबू रहे और न (घर) लौट सकें

وَمَنْ نُعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ ۚ أَفَلَا يَعْقِلُونَ

और हम जिस शख्स को (बहुत) ज्यादा उम्र देते हैं तो उसे खिलकत में उलट (कर बच्चों की तरह मजबूर कर) देते हैं तो क्या वह लोग समझते नहीं

وَمَا عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْدِبُ ۚ بَغِيٍّ لَهُ ۚ ۖ إِنَّ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ ۚ وَقُرْءَانٌ مُّبِينٌ ۚ

और हमने न उस (पैगम्बर) को शेर की तालीम दी है और न शायरी उसकी शान के लायक है ये (किताब) तो बस (निरी) नसीहत और साफ-साफ कुरान है

لِيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا ۚ وَيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكَافِرِينَ

ताकि जो ज़िन्दा (दिल आकिल) हों उसे (अज़ाब से) डराए और काफ़िरों पर (अज़ाब का) क़ौल साबित हो जाए (और हुज्जत बाक़ी न रहे)

أَوَلَمْ يَرَوْا ۚ أَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِمَّا عَمِلَتْ أَيْدِينَا أَنْعَمًا ۚ فَهُمْ لَهَا مَلَكَونَ

क्या उन लोगों ने इस पर भी ग़ौर नहीं किया कि हमने उनके फायदे के लिए चारपाए उस चीज़ से पैदा किए जिसे हमारी ही कुदरत ने बनाया तो ये लोग (स्वाहमास्वाह) उनके मालिक बन गए

وَذَلَّلْنَاهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ وَمِنْهَا يَأْكُلُونَ

और हम ही ने चार पायों को उनका मुतीय बना दिया तो बाज़ उनकी सवारियां हैं और बाज़ को खाते हैं

وَلَهُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ۚ أَفَلَا يَشْكُرُونَ

और चार पायों में उनके (और) बहुत से फायदे हैं और पीने की चीज़ (दूध) तो क्या ये लोग (इस पर भी) शुक्र नहीं करते

وَاتَّخَذُوا ۙ مِنْ دُونِ اللَّهِ ءَالِهَةً ۙ لَعَلَّهُمْ يُنصَرُونَ

और लोगों ने खुदा को छोड़कर (फर्जी) माबूद बनाए हैं ताकि उन्हें उनसे कुछ मद मिले हालाँकि वह लोग उनकी किसी तरह मद कर ही नहीं सकते

لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ ۙ مُّحْضَرُونَ

और ये कुफ़ार उन माबूदों के लश्कर हैं (और क़यामत में) उन सबकी हाज़िरी ली जाएगी

فَلَا يَحْزُنكَ قَوْلُهُمْ ۙ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ

तो (ऐ रसूल) तुम इनकी बातों से आज़ुरदा खातिर (पेरशान) न हो जो कुछ ये लोग छिपा कर करते हैं और जो कुछ खुल्लम खुल्ला करते हैं-हम सबको यक़ीनी जानते हैं

أَوَلَمْ يَرَ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ نُطْفَةٍ ۙ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ ۙ مُّبِينٌ ۙ

क्या आदमी ने इस पर भी ग़ौर नहीं किया कि हम ही ने इसको एक ज़लील नुत्फे से पैदा किया फिर वह यकायक (हमारा ही) खुल्लम खुल्ला मुक़ाबिल (बना) है

وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا ۙ وَنَسِيَ خَلْقَهُ ۙ قَالَ مَنْ يُحْيِ الْعِظَمَ وَهِيَ رَمِيمٌ ۙ

और हमारी निसबत बातें बनाने लगा और अपनी ख़िलक़त (की हालत) भूल गया और कहने लगा कि भला जब ये हड्डियाँ (सड़गल कर) खाक हो जाएँगी तो (फिर) कौन (दोबारा) ज़िन्दा कर सकता है

قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنْشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ ۙ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि उसको वही ज़िन्दा करेगा जिसने उनको (जब ये कुछ न थे) पहली बार ज़िन्दा कर (रखा)

الَّذِي جَعَلَ لَكُم مِّنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا ۙ فَإِذَا أَنْتُمْ مِّنْهُ تُوقِدُونَ

और वह हर तरह की पैदाइश से वाक़िफ़ है जिसने तुम्हारे वास्ते (मिर्ख और अफ़ार के) हरे दरख़्त से आग पैदा कर दी फिर तुम उससे (और) आग सुलगा लेते हो

81

أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمُوتَ وَالْأَرْضَ بِقَدِيرٍ عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ ۚ بَلَىٰ وَهُوَ
الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ

(भला) जिस (खुदा) ने सारे आसमान और ज़मीन पैदा किए क्या वह इस पर क़ाबू नहीं रखता कि उनके मिस्ल (दोबारा) पैदा कर दे हाँ (ज़रूर क़ाबू रखता है) और वह तो पैदा करने वाला वाकिफ़कार है

82

إِنَّمَا أَمْرُهُ ۖ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ ۖ كُنْ فَيَكُونُ

उसकी शान तो ये है कि जब किसी चीज़ को (पैदा करना) चाहता है तो वह कह देता है कि "हो जा" तो (फौरन) हो जाती है

83

فَسُبْحَنَّ الَّذِي بِيَدِهِ ۖ مَلَكَوتُ كُلِّ شَيْءٍ ۖ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ

तो वह खुद (हर नफ्स से) पाक साफ़ है जिसके क़ब्ज़े कुदरत में हर चीज़ की हिकमत है और तुम लोग उसी की तरफ लौट कर जाओगे

As-Saaffaat

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَالصَّفَّاتِ صَفًّا ۚ

(इबादत या जिहाद में) पर बाँधने वालों की (क़सम)

2

فَالزُّجَرِ زَجْرًا ۚ

फिर (बदों को बुराई से) झिड़क कर डाँटने वाले की (क़सम)

3

فَالْتَلَيْتِ زَكَرًا ۚ

फिर कुरान पढ़ने वालों की क़सम है

4

إِنَّ إِلَهُكُمْ لَوَاحِدٌ ۚ

तुम्हारा माबूद (यक़ीनी) एक ही है

5

رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشْرِقِ

जो सारे आसमान ज़मीन का और जो कुछ इन दोनों के दरमियान है (सबका) परवरदिगार है

6

إِنَّا زَيْنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِزِينَةِ الْكَوَاكِبِ

और (चाँद सूरज तारे के) तुलूउ व (गुरूब) के मक़ामात का भी मालिक है हम ही ने नीचे वाले आसमान को तारों की आरइश (जगमगाहट) से आरास्ता किया

7

وَحِفْظًا ۚ مِّنْ كُلِّ شَيْطَانٍ ۚ مَّارِدٍ ۚ

और (तारों को) हर सरकश शैतान से हिफ़ाज़त के वास्ते (भी पैदा किया)

8

لَّا يَسْمَعُونَ إِلَى الْمَلَأِ الْأَعْلَى وَيُقَذِفُونَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۚ

कि अब शैतान आलमे बाला की तरफ़ कान भी नहीं लगा सकते और (जहाँ सुन गुन लेना चाहा तो) हर तरफ़ से खदेड़ने के लिए शहाब फेके जाते हैं

9

دُحُورًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ ۚ وَاصِبٌ

और उनके लिए पाएदार अज़ाब है

10

إِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَأَتْبَعَهُ ۚ شِهَابٌ ۚ ثَاقِبٌ ۚ

मगर जो (शैतान शाज़ व नादिर फरिश्तों की) कोई बात उचक ले भागता है तो आग का दहकता हुआ तीर उसका पीछा करता है

11

فَاسْتَفْتِهِمْ أَهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمْ مِّنْ خَلْقًا ۚ إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِّنْ طِينٍ ۚ لَّازِبٍ ۚ

तो (ऐ रसूल) तुम उनसे पूछो तो कि उनका पैदा करना ज्यादा दुश्वार है या उन (मज़कूरा) चीज़ों का जिनको हमने पैदा किया हमने तो उन लोगों को लसदार मिट्टी से पैदा किया

12

بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُونَ

बल्कि तुम (उन कुफ़ार के इन्कार पर) ताज्जुब करते हो और वह लोग (तुमसे) मसखरापन करते हैं

13

وَإِذَا ذُكِّرُوا لَا يَذْكُرُونَ

और जब उन्हें समझाया जाता है तो समझते नहीं हैं

14

وَإِذَا رَأَوْا آيَةً يَسْتَسْخِرُونَ

और जब किसी मौजिजे को देखते हैं तो (उससे) मसखरापन करते हैं

15

وَقَالُوا إِن هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ

और कहते हैं कि ये तो बस खुला हुआ जादू है

16

أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۖ وَعِظْمًا ۖ أَعْنَا لَمَبْعُوثُونَ

भला जब हम मर जाएँगे और खाक और हड्डियाँ रह जाएँगे

17

أَوَءَابَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ

तो क्या हम या हमारे अगले बाप दादा फिर दोबारा क़ब्रों से उठा खड़े किए जाएँगे

18

قُلْ نَعَمْ وَأَنْتُمْ دُخْرُونَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि हाँ (ज़रूर उठाए जाओगे)

19

فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ ۖ وَحِدَةٌ ۖ فَإِذَا هُمْ يَنْظُرُونَ

और तुम ज़लील होगे और वह (क़यामत) तो एक ललकार होगी फिर तो वह लोग फ़ौरन ही (आँखे फाड़-फाड़ के) देखने लगेंगे

20

وَقَالُوا ۖ يُؤَيَّلْنَا هَذَا يَوْمُ الدِّينِ

और कहेंगे हाए अफसोस ये तो क़यामत का दिन है

21

هَذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ ۖ تَكْذِبُونَ

(जवाब आएगा) ये वही फैसले का दिन है जिसको तुम लोग (दुनिया में) झूठ समझते थे

22

ۚ أَحْشَرُوهَا ۖ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ وَأَزْوَاجُهُمْ وَمَا كَانُوا ۖ يَعْبُدُونَ

(और फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि) जो लोग (दुनिया में) सरकशी करते थे उनको और उनके साथियों को और खुदा को छोड़कर जिनकी परसतिश करते हैं

23

مِنْ دُونِ اللَّهِ فَأَهْدُوهُمْ إِلَى صِرَاطِ الْجَحِيمِ

उनको (सबको) इकट्ठा करो फिर उन्हें जहन्नुम की राह दिखाओ

24

وَقِفُّهُمْ ۚ إِنَّهُمْ مَسْئُولُونَ

और (हाँ ज़रा) उन्हें ठहराओ तो उनसे कुछ पूछना है

25

مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُونَ

(अरे कमबख्तों) अब तुम्हें क्या होगा कि एक दूसरे की मदद नहीं करते

26

بَلْ هُمْ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ

(जवाब क्या देंगे) बल्कि वह तो आज गर्दन झुकाए हुए हैं

27

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ ۖ يَتَسَاءَلُونَ

और एक दूसरे की तरफ मुतावज्जे होकर बाहम पूछताछ करेंगे

28

قَالُوا ۚ إِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَأْتُونَنَا عَنْ الْيَمِينِ

(और इन्सान शयातीन से) कहेंगे कि तुम ही तो हमारी दाहिनी तरफ से (हमें बहकाने को) चढ़ आते थे

29

قَالُوا ۚ بَلْ لَّمْ تَكُونُوا ۚ مُؤْمِنِينَ

वह जवाब देंगे (हम क्या जानें) तुम तो खुद ईमान लाने वाले न थे

30

وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطَانٍ ۚ ۚ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طَٰغِينَ

और (साफ़ तो ये है कि) हमारी तुम पर कुछ हुकूमत तो थी नहीं बल्कि तुम खुद सरकश लोग थे

31

فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَا ۚ إِنَّآ لَذَٰئِقُونَ

फिर अब तो लोगों पर हमारे परवरदिगार का (अज़ाब का) कौल पूरा हो गया कि अब हम सब यकीनन अज़ाब का मज़ा चखेंगे

32

فَأَغْوَيْنَكُمْ ۖ إِنَّا كُنَّا غُٰوِينَ

हम खुद गुमराह थे तो तुम को भी गुमराह किया

33

فَإِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ ۖ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ

गरज़ ये लोग सब के सब उस दिन अज़ाब में शरीक होंगे

34

إِنَّا كَذَٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ

और हम तो गुनाहगारों के साथ यूँ ही किया करते हैं ये लोग ऐसे (शरीर) थे

35

إِنَّهُمْ كَانُوا ۚ إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ

कि जब उनसे कहा जाता था कि खुदा के सिवा कोई माबूद नहीं तो अकड़ा करते थे

36

وَيَقُولُونَ أَنِنَّا لَتَارِكُوا ؕ ءَالِهَتِنَا لِشَاعِرٍ ؕ مَّجْنُونٍ ؕ

और ये लोग कहते थे कि क्या एक पागल शायर के लिए हम अपने माबूदों को छोड़ बैठें (अरे कम्बख्तों ये शायर या पागल नहीं)

37

بَلْ جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِينَ

बल्कि ये तो हक़ बात लेकर आया है और (अगले) पैग़म्बरों की तसदीक़ करता है

38

إِنَّكُمْ لَذَآئِقُوا ؕ الْعَذَابِ الْآلِيمِ

तुम लोग (अगर न मानोगे) तो ज़रूर दर्दनाक अज़ाब का मज़ा चखोगे

39

وَمَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ

और तुम्हें तो उसके किये का बदला दिया जाएगा जो (जो दुनिया में) करते रहे

40

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ

मगर खुदा के बरगुज़ीदा बन्दे

41

أَوْ ؕ لَّيْكَ لَهُمْ رِزْقٌ ؕ مَّعْلُومٌ ؕ

उनके वास्ते (बेहिश्त में) एक मुकर्रर रोज़ी होगी

42

فَوْكَهُ ؕ وَهُمْ مُكْرَمُونَ

(और वह भी ऐसी वैसी नहीं) हर क़िस्म के मेवे

43

فِي جَنَّتِ النَّعِيمِ

और वह लोग बड़ी इज़्ज़त से नेअमत के (लदे हुए)

44

عَلَى سُرُرٍ مُّتَقَبِلِينَ

बाग़ों में तख्तों पर (चैन से) आमने सामने बैठे होंगे

45

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِّنْ مَّعِينٍ

उनमें साफ सफेद बुराक़ शराब के ज़ाम का दौर चल रहा होगा

46

بِخِضَاءٍ لَّدَّةٍ لِلشَّرِيبِينَ

जो पीने वालों को बड़ा मज़ा देगी

47

لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُونَ

(और फिर) न उस शराब में खुमार की वजह से) दर्द सर होगा और न वह उस (के पीने) से मतवाले होंगे

48

وَعِنْدَهُمْ قَصِرَتُ الْأُطْرَفِ عَيْنٌ

और उनके पहलू में (शर्म से) नीची निगाहें करने वाली बड़ी बड़ी आँखों वाली परियाँ होगी

49

كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُونٌ

(उनकी) गोरी-गोरी रंगतों में हल्की सी सुर्खी ऐसी झलकती होगी

50

فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ

गोया वह अन्डे हैं जो छिपाए हुए रखे हो

51

قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ

फिर एक दूसरे की तरफ मुताबज्जे पाकर बाहम बातचीत करते करते उनमें से एक कहने वाला बोल उठेगा कि (दुनिया में) मेरा एक दोस्त था

52

يَقُولُ أَأَنْتَ لِمَنِ الْمُصَدِّقِينَ

और (मुझसे) कहा करता था कि क्या तुम भी क़यामत की तसदीक़ करने वालों में हो

53

أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۖ أَوْ عِظْمًا ۖ أَوَّانًا لِّمَدِينُونَ

(भला जब हम मर जाएँगे) और (सड़ गल कर) मिट्टी और हव्ी (होकर) रह जाएँगे तो क्या हमको दोबारा ज़िन्दा करके हमारे (आमाल का) बदला दिया जाएगा

54

قَالَ هَلْ أَنْتُمْ مُطَّلِعُونَ

(फिर अपने बेहश्त के साथियों से कहेगा)

55

فَاطَّلَعَ فَرَءَاهُ فِي سَوَاءِ الْجَحِيمِ

तो क्या तुम लोग भी (मेरे साथ उसे झांक कर देखोगे) गरज़ झाँका तो उसे बीच जहन्नुम में (पड़ा हुआ) देखा

56

قَالَ تَأَلَّيْهِ إِنْ كِدَتْ لَتُرْدِينَ

(ये देख कर बेसाख्ता) बोल उठेगा कि खुदा की क़सम तुम तो मुझे भी तबाह करने ही को थे

57

وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِينَ

और अगर मेरे परवरदिगार का एहसान न होता तो मैं भी (इस वक्त) तेरी तरह जहन्नुम में गिरफ्तार किया गया होता

58

أَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِينَ

(अब बताओ) क्या (मैं तुम से न कहता था) कि हम को इस पहली मौत के सिवा फिर मरना नहीं है

59

إِلَّا مَوْتَتَنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ

और न हम पर (आख़ेरत) में अज़ाब होगा

60

إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ

(तो तुम्हें यक्रीन न होता था) ये यक्रीनी बहुत बड़ी कामयाबी है

61

لِمِثْلِ هَذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَمِلُونَ

ऐसी (ही कामयाबी) के वास्ते काम करने वालों को कारगुजारी करनी चाहिए

62

أَذَلَّكَ خَيْرٌ؟ نَزَلًا أَمْ شَجَرَةً الزَّقُّومِ

भला मेहमानी के वास्ते ये (सामान) बेहतर है या थोहड़ का दरख्त (जो जहन्नुमियों के वास्ते होगा)

63

إِنَّا جَعَلْنَهَا فِتْنَةً؟ لِلظَّالِمِينَ

जिसे हमने यक्रीनन ज़ालिमों की आजमाइश के लिए बनाया है

64

إِنَّهَا شَجَرَةٌ؟ تَخْرُجُ فِي أَصْلِ الْجَحِيمِ

ये वह दरख्त है जो जहन्नुम की तह में उगता है

65

طَلَعَهَا كَأَنَّهُ؟ رُءُوسُ الشَّيَاطِينِ

उसके फल ऐसे (बदनुमा) हैं गोया (हू बहू) साँप के फन जिसे छूते दिल डरे

66

فَإِنَّهُمْ لَءَاكِلُونَ مِنْهَا فَمَالُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ

फिर ये (जहन्नुमी लोग) यक्रीनन उसमें से खाएँगे फिर उसी से अपने पेट भरेंगे

67

ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا؟ مِّنْ حَمِيمٍ

फिर उसके ऊपर से उन को खूब खौलता हुआ पानी (पीप वगैरह में) मिला मिलाकर पीने को दिया जाएगा

68

ثُمَّ إِنَّ مَرْجِعَهُمْ لِإِلَى الْجَحِيمِ

फिर (खा पीकर) उनको जहन्नुम की तरफ यक्रीनन लौट जाना होगा

69

إِنَّهُمْ أَلفُوا؟ ءَابَاءَهُمْ ضَالِّينَ

उन लोगों ने अपन बाप दादा को गुमराह पाया था

70

فَهُمْ عَلَىٰ ءَاثَرِهِمْ يُهْرَعُونَ

ये लोग भी उनके पीछे दौड़े चले जा रहे हैं

71

وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ الْأَوَّلِينَ

और उनके कबल अगलों में से बहुतेरे गुमराह हो चुके

72

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيهِمْ مُنْذِرِينَ

उन लोगों के डराने वाले (पैगम्बरों) को भेजा था

73

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عِقَابُ الْمُنْذَرِينَ

ज़रा देखो तो कि जो लोग डराए जा चुके थे उनका क्या बुरा अन्जाम हुआ

74

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ

मगर (हाँ) खुदा के निरे खरे बन्दे (महफूज़ रहे)

75

وَلَقَدْ نَادَيْنَا نُوحًا؟ فَلَئِمَّ الْمُجِيبُونَ

और नूह ने (अपनी कौम से मायूस होकर) हमें ज़रूर पुकारा था (देखो हम) क्या खूब जवाब देने वाले थे

76

وَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ ۖ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ

और हमने उनको और उनके लड़के वालों को बड़ी (सख्त) मुसीबत से नजात दी

77

وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهُ ۖ هُمْ الْبَاقِينَ

और हमने (उनमें वह बरकत दी कि) उनकी औलाद को (दुनिया में) बरकरार रखा

78

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ

और बाद को आने वाले लोगों में उनका अच्छा चर्चा बाक़ी रखा

79

سَلَّمَ عَلَى نُوحٍ ۖ فِي الْعَالَمِينَ

कि सारी खुदायी में (हर तरफ से) नूह पर सलाम है

80

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ

हम नेकी करने वालों को यूँ जज़ाए ख़ैर अता फरमाते हैं

81

إِنَّهُ ۖ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ

इसमें शक नहीं कि नूह हमारे (खास) ईमानदार बन्दों से थे

82

ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخَرِينَ

फिर हमने बाक़ी लोगों को डुबो दिया

83

ۖ وَإِنَّ مِنْ شِيعَتِهِ ۖ لَإِبْرَاهِيمَ

और यक़ीनन उन्हीं के तरीक़ो पर चलने वालों में इबराहीम (भी) ज़रूर थे

84

إِذْ جَاءَ رَبُّهُ ۖ بِقَلْبٍ ۖ سَلِيمٍ

जब वह अपने परवरदिगार (कि इबादत) की तरफ (पहलू में) ऐसा दिल लिए हुए बड़े जो (हर ऐब से پاک था

85

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ ۖ مَاذَا تَعْبُدُونَ

जब उन्होंने अपने (मुँह बोले) बाप और अपनी कौम से कहा कि तुम लोग किस चीज़ की परसतिश करते हो

86

أَتُفَكَّرُ ۖ دُونَ اللَّهِ تُرِيدُونَ

क्या खुदा को छोड़कर दिल से गढ़े हुए माबूदों की तमन्ना रखते हो

87

فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ

फिर सारी खुदाई के पालने वाले के साथ तुम्हारा क्या ख्याल है

88

فَنَظَرَ نَظْرَةً ۖ فِي النُّجُومِ

फिर (एक ईद में उन लोगों ने चलने को कहा) तो इबराहीम ने सितारों की तरफ एक नज़र देखा

89

فَقَالَ إِنِّي سَقِيمٌ ۖ

और कहा कि मैं (अनकरीब) बीमार पड़ने वाला हूँ

90

فَتَوَلَّوْا ۖ عَنْهُ مُدْبِرِينَ

तो वह लोग इबराहीम के पास से पीठ फेर फेर कर हट गए

91

فَرَاغَ إِلَىٰ آلِهِتِهِمْ فَقَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ

(बस) फिर तो इबराहीम चुपके से उनके बुतों की तरफ मुतावज्जे हुए और (तान से) कहा तुम्हारे सामने इतने चढ़ाव रखते हैं

92

مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُونَ

आखिर तुम खाते क्यों नहीं (अरे तुम्हें क्या हो गया है)

93

فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبُهَا بِالْيَمِينِ

कि तुम बोलते तक नहीं

94

فَأَقْبَلُوا ۖ إِلَيْهِ يَزْفُونَ

फिर तो इबराहीम दाहिने हाथ से मारते हुए उन पर पिल पड़े (और तोड़-फोड़ कर एक बड़े बुत के गले में कुल्हाड़ी डाल दी)

95

قَالَ أَتَعْبُدُونَ مَا تَنْحِتُونَ

जब उन लोगों को खबर हुई तो इबराहीम के पास दौड़ते हुए पहुँचे

96

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُونَ

इबराहीम ने कहा (अफ़सोस) तुम लोग उसकी परसतिश करते हो जिसे तुम लोग खुद तराश कर बनाते हो

97

قَالُوا ۖ أَبْنُوا ۖ لَهُ ۖ بُيُوتٌ ۖ فَأَلْقُوهُ فِي الْجَحِيمِ

हालाँकि तुमको और जिसको तुम लोग बनाते हो (सबको) खुदा ही ने पैदा किया है (ये सुनकर) वह लोग (आपस में कहने लगे) इसके लिए (भट्टी की सी) एक इमारत बनाओ

98

فَأَرَادُوا ۖ بِهِ ۖ كَيْدًا ۖ فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَسْفَلِينَ

और (उसमें आग सुलगा कर उसी दहकती हुई आग में इसको डाल दो) फिर उन लोगों ने इबराहीम के साथ मक्कारी करनी चाही

وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ

तो हमने (आग सदैव गुलज़ार करके) उन्हें नीचा दिखाया और जब (आज़र ने) इबराहीम को निकाल दिया तो बोले मैं अपने परवरदिगार की तरफ जाता हूँ

رَبِّ هَبْ لِي مِنَ الصَّالِحِينَ

वह अनक़रीब ही मुझे रूबरा कर देगा (फिर ग़रज की) परवरदिगार मुझे एक नेकी का (फरज़न्द) इनायत फरमा

فَبَشِّرْنَاهُ بِغُلَامٍ حَلِيمٍ ۚ

तो हमने उनको एक बड़े नरम दिले लड़के (के पैदा होने की) खुशख़बरी दी

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يَبْنَئِي إِنِّي أَرَىٰ فِي الْمَنَامِ أَنِّي أَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرَىٰ ۚ
قَالَ يَأْبَتِ أَفْعَلُ مَا تُؤْمَرُ ۚ سَتَجِدُنِي إِن شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّابِرِينَ

फिर जब इस्माईल अपने बाप के साथ दौड़ धूप करने लगा तो (एक दफ़ा) इबराहीम ने कहा बेटा खूब मैं (वही के ज़रिये क्या) देखता हूँ कि मैं तो खुद तुम्हें ज़िबाह कर रहा हूँ तो तुम भी ग़ौर करो तुम्हारी इसमें क्या राय है इसमाईल ने कहा अब्बा जान जो आपको हुक्म हुआ है उसको (बे तअम्मुल) कीजिए अगर खुदा ने चाहा तो मुझे आप सब करने वालों में से पाएंगे

فَلَمَّا أَسْلَمَا وَتَلَّهُ ۚ لِلْجَبِينِ

फिर जब दोनों ने ये ठान ली और बाप ने बेटे को (ज़िबाह करने के लिए) माथे के बल लिटाया

وَنَدَيْنَاهُ أَن يَأْبُرْهُمُ

और हमने (आमादा देखकर) आवाज़ दी ऐ इबराहीम

قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْيَا ۚ إِنَّا كَذَّلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ

तुमने अपने ख़्वाब को सच कर दिखाया अब तुम दोनों को बड़े मरतबे मिलेंगे हम नेकी करने वालों को यूँ जज़ाए ख़ैर देते हैं

106

إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْبَلَوُ؟ الْمُبِينُ

इसमें शक नहीं कि ये यक़ीनी बड़ा सख्त और सरीही इम्तिहान था

107

وَفَدَيْنَهُ بِذَبْحٍ عَظِيمٍ؟

और हमने इस्माईल का फ़िदया एक ज़िबाहे अज़ीम (बड़ी कुर्बानी) करार दिया

108

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ

और हमने उनका अच्छा चर्चा बाद को आने वालों में बाक़ी रखा है

109

سَلَّمَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ

कि (सारी खुदायी में) इबराहीम पर सलाम (ही सलाम) हैं

110

كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ

हम यूँ नेकी करने वालों को जज़ाए ख़ैर देते हैं

111

إِنَّهُ؟ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ

बेशक इबराहीम हमारे (खास) ईमानदार बन्दों में थे

112

وَبَشَّرْنَاهُ بِإِسْحَاقَ نَبِيٍّ؟ مِّنَ الصَّالِحِينَ

और हमने इबराहीम को इसहाक़ (के पैदा होने की) खुशख़बरी दी थी

113

وَبَرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلَىٰ إِسْحَاقَ؟ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ؟ وَظَالِمٌ؟ لِّنَفْسِهِ؟ مُبِينٌ؟

जो एक नेकोसार नबी थे और हमने खुद इबराहीम पर और इसहाक़ पर अपनी बरकत नाज़िल की और इन दोनों की नस्ल में बाज़ तो नेकोकार और बाज़ (नाफरमानी करके) अपनी जान पर सरीही सितम ढाने वाला

114

وَلَقَدْ مَنَّا عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ

और हमने मूसा और हारून पर बहुत से एहसानात किए हैं

115

وَنَجَّيْنَاهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ

और खुद दोनों को और इनकी क़ौम को बड़ी (सख्त) मुसीबत से नज़ात दी

116

وَنَصَرْنَاهُمْ فَكَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ

और (फिराऊन के मुक़ाबले में) हमने उनकी मदद की तो (आख़िर) यही लोग ग़ालिब रहे

117

وَأَتَيْنَاهُمَا الْكِتَابَ الْمُسْتَبِينَ

और हमने उन दोनों को एक वाज़ेए उलम तालिब किताब (तौरैत) अता की

118

وَهَدَيْنَاهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ

और दोनों को सीधी राह की हिदायत फ़रमाई

119

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي آلِ آخِرِينَ

और बाद को आने वालों में उनका ज़िक्र ख़ैर बाक़ी रखा

120

سَلَامٌ عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ

कि (हर जगह) मूसा और हारून पर सलाम (ही सलाम) है

121

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ

हम नेकी करने वालों को यूँ जज़ाए ख़ैर अता फरमाते हैं

122

إِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ

बेशक ये दोनों हमारे (खालिस ईमानदार बन्दों में से थे)

123

وَإِنَّ إِلْيَاسَ لَمِنْ الْمُرْسَلِينَ

और इसमें शक नहीं कि इलियास यक्कीनन पैगम्बरों में से थे

124

إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَأَلَا تَتَّقُونَ

जब उन्होंने अपनी क्रौम से कहा कि तुम लोग (खुदा से) क्यों नहीं डरते

125

أَتَدْعُونَ بَعْلًا ۖ وَتَذَرُونَ أَحْسَنَ الْخُلُقِينَ

क्या तुम लोग बाल (बुत) की परसतिश करते हो और खुदा को छोड़े बैठे हो जो सबसे बेहतर पैदा करने वाला है

126

اللَّهُ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأُولِينَ

और (जो) तुम्हारा परवरदिगार और तुम्हारे अगले बाप दादाओं का (भी) परवरदिगार है

127

فَكَذَّبُوهُ فَإِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ

तो उसे लोगों ने झुठला दिया तो ये लोग यक्कीनन (जहन्नुम) में गिरफ्तार किए जाएँगे

128

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ

मगर खुदा के निरे खरे बन्दे महफूज़ रहेंगे

129

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ

और हमने उनका ज़िक्र खैर बाद को आने वालों में बाक़ी रखा

130

سَلَّمَ عَلَىٰ آلِ يَاسِينَ

कि (हर तरफ से) आले यासीन पर सलाम (ही सलाम) है

131

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ

हम यक्रीनन नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं

132

إِنَّهُ ۖ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ

बेशक वह हमारे (खालिस) ईमानदार बन्दों में थे

133

وَإِنَّ لُوطًا ۖ لَّمِنَ الْمُرْسَلِينَ

और इसमें भी शक नहीं कि लूत यक्रीनी पैग़म्बरों में से थे

134

إِذْ نَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ ۖ أَجْمَعِينَ

जब हमने उनको और उनके लड़के वालों सब को नज़ात दी

135

إِلَّا عَجُوزًا ۖ فِي الْغَابِرِينَ

मगर एक (उनकी) बूढ़ी बीबी जो पीछे रह जाने वालों ही में थीं

136

ثُمَّ دَمَرْنَا آلَآخَرِينَ

फिर हमने बाक़ी लोगों को तबाह व बर्बाद कर दिया

137

وَإِنَّكُمْ لَتَمُرُّونَ عَلَيْهِمْ مُصْبِحِينَ

और ऐ अहले मक्का तुम लोग भी उन पर से (कभी) सुबह को और (कभी) शाम को (आते जाते गुज़रते हो)

138

وَبِالْأَيْلِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ

तो क्या तुम (इतना भी) नहीं समझते

139

وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ

और इसमें शक नहीं कि यूनस (भी) पैगम्बरों में से थे

140

إِذْ أَبَقَ إِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ

(वह वक्त याद करो) जब यूनस भाग कर एक भरी हुई कश्ती के पास पहुँचे

141

فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ

तो (अहले कश्ती ने) कुरआ डाला तो (उनका ही नाम निकला) यूनस ने ज़क उठायी (और दरिया में गिर पड़े)

142

فَالْتَقَمَهُ الْحُوتُ وَهُوَ مُلِيمٌ ۚ

तो उनको एक मछली निगल गयी और यूनस खुद (अपनी) मलामत कर रहे थे

143

فَلَوْلَا أَنَّهُ ۚ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ

फिर अगर यूनस (खुदा की) तसबीह (व ज़िक्र) न करते

144

لَلْبَيْتِ فِي بَطْنِهِ ۚ إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ

तो रोज़े क़यामत तक मछली के पेट में रहते

145

ۚ فَنبَذْنَاهُ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ سَقِيمٌ ۚ

फिर हमने उनको (मछली के पेट से निकाल कर) एक खुले मैदान में डाल दिया

146

وَأَنذَرْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً ۚ مِّن يَّقُطِينَ ۚ

और (वह थोड़ी देर में) बीमार निढाल हो गए थे और हमने उन पर साये के लिए एक कटू का दरख्त उगा दिया

147

وَأَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ مَا ۚ نَةِ ۚ أَلْفٍ أَوْ يَزِيدُونَ

और (इसके बाद) हमने एक लाख बल्कि (एक हिसाब से) ज्यादा आदमियों की तरफ (पैग़म्बर बना कर भेजा)

148

فَأَمْنُوا ۚ فَمَتَّعْنَاهُمْ إِلَىٰ حِينٍ ۚ

तो वह लोग (उन पर) ईमान लाए फिर हमने (भी) एक खास वक्त तक उनको चैन से रखा

149

فَأَسْتَفْتِهِمُ الرِّبَّكَ ۚ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُونَ

तो (ऐ रसूल) उन कुफ़्कार से पूछो कि क्या तुम्हारे परवरदिगार के लिए बेटियाँ हैं और उनके लिए बेटे

150

أَمْ خَلَقْنَا الْمَلَائِكَةَ إِنثًا ۚ وَهُمْ شَاهِدُونَ

(क्या वाक़ई) हमने फरिश्तों की औरतें बनाया है और ये लोग (उस वक्त) मौजूद थे

151

أَلَا إِنَّهُمْ مِّنْ إِفْكِهِمْ لَيَقُولُونَ

ख़बरदार (याद रखो कि) ये लोग यक़ीनन अपने दिल से गढ़-गढ़ के कहते हैं कि खुदा औलाद वाला है

152

وَلَدَ اللَّهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ

और ये लोग यक़ीनी झूठे हैं

153

أَصْطَفَىٰ الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِينَ

क्या खुदा ने (अपने लिए) बेटियों को बेटों पर तरज़ीह दी है

154

مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ

(अरे कम्बख्तों) तुम्हें क्या जुनून हो गया है तुम लोग (बैठे-बैठे) कैसा फैसला करते हो

155

أَفَلَا تَذَكَّرُونَ

तो क्या तुम (इतना भी) गौर नहीं करते

156

أَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ ۚ مُّبِينٌ ۚ

या तुम्हारे पास (इसकी) कोई वाज़ेह व रौशन दलील है

157

فَأْتُوا ۚ بِكِتٰبِكُمْ إِن كُنْتُمْ صٰدِقِينَ

तो अगर तुम (अपने दावे में) सच्चे हो तो अपनी किताब पेश करो

158

وَجَعَلُوا ۚ بَيْنَهُ ۚ وَبَيْنَ الْجَنَّةِ نَسَبًا ۚ ا ۚ وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ

और उन लोगों ने खुदा और जिन्नात के दरमियान रिश्ता नाता मुकर्रर किया है हालाँकि जिन्नात बखूबी जानते हैं कि वह लोग यक़ीनी (क़यामत में बन्दों की तरह) हाज़िर किए जाएँगे

159

سُبْحٰنَ ٱللّٰهِ عَمَّا يُصِفُونَ

ये लोग जो बातें बनाया करते हैं इनसे खुदा पाक साफ़ है

160

إِلَّا عِبَادَ ٱللّٰهِ ٱلْمُخْلِصِينَ

मगर खुदा के निरे खरे बन्दे (ऐसा नहीं कहते)

161

فَإِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ

गरज़ तुम लोग खुद और तुम्हारे माबूद

162

مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفِتْنِينَ

उसके खिलाफ (किसी को) बहका नहीं सकते

163

إِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيمِ

मगर उसको जो जहन्नुम में झोंका जाने वाला है

164

وَمَا مِنَّا إِلَّا لَهُ ۖ مَقَامٌ ۚ مَّعْلُومٌ ۚ

और फरिश्ते या आइम्मा तो ये कहते हैं कि मैं हर एक का एक दरजा मुकर्रर है

165

وَإِنَّا لَنَحْنُ الصَّافُّونَ

और हम तो यक्रीनन (उसकी इबादत के लिए) सफ बाँधे खड़े रहते हैं

166

وَإِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُونَ

और हम तो यक्रीनी (उसकी) तस्बीह पढ़ा करते हैं

167

وَإِنْ كَانُوا ۚ لَيَقُولُنَّ

अगरचे ये कुफफार (इस्लाम के क़बूल) कहा करते थे

168

لَوْ أَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا ۚ مِّنَ الْأَوَّلِينَ

कि अगर हमारे पास भी अगले लोगों का तज़क़िरा (किसी किताबे खुदा में) होता

169

لَكُنَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ

तो हम भी खुदा के निरे खरे बन्दे ज़रूर हो जाते

170

فَكَفَرُوا ۚ بِهِ ۚ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ

(मगर जब किताब आयी) तो उन लोगों ने उससे इन्कार किया खैर अनकरीब (उसका नतीजा) उन्हें मालूम हो जाएगा

171

وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ

और अपने खास बन्दों पैगम्बरों से हमारी बात पक्की हो चुकी है

172

إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُورُونَ

कि इन लोगों की (हमारी बारगाह से) यक़ीनी मदद की जाएगी

173

وَإِنَّ جُنَدَنَا لَهُمُ الْغَالِبُونَ

और हमारा लश्कर तो यक़ीनन ग़ालिब रहेगा

174

فَقَوْلَ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ۚ

तो (ऐ रसूल) तुम उनसे एक खास वक्त तक मुँह फेरे रहो

175

وَأَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ

और इनको देखते रहो तो ये लोग अनकरीब ही (अपना नतीजा) देख लेगे

176

أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ

तो क्या ये लोग हमारे अज़ाब की जल्दी कर रहे हैं

177

فَإِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِينَ

फिर जब (अज़ाब) उनकी अंगनाई में उतर पड़ेगा तो जो लोग डराए जा चुके हैं उनकी भी क्या बुरी सुबह होगी

178

وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ۚ

और उन लोगों से एक खास वक्त तक मुँह फेरे रहो

179

وَأَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ

और देखते रहो ये लोग तो खुद अनकरीब ही अपना अन्जाम देख लेगें

180

سُبْحَنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ

ये लोग जो बातें (खुदा के बारे में) बनाया करते हैं उनसे तुम्हारा परवरदिगार इज्जत का मालिक पाक साफ है

181

وَسَلَّمَ عَلَى الْمُرْسَلِينَ

और पैग़म्बरों पर (दुरूद) सलाम हो

182

وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

और कुल तारीफ खुदा ही के लिए सज़ावार हैं जो सारे जहाँ का पालने वाला है

Saad

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ص ۚ وَالْقُرْآنِ ذِي الذِّكْرِ

सआद नसीहत करने वाले कुरान की कसम (तुम बरहक़ नबी हो)

2

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ فِي عِزَّةٍ ۚ وَشِقَاقٍ ۚ

मगर ये कुफ़्कार (स्वाहमस्वाह) तकबुर और अदावत में (पड़े अंधे हो रहे हैं)

3

كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ قَرْنٍ ۚ فَنَادَوْا ۚ وَلَاتَ حِينَ مَنَاصٍ ۚ

हमने उन से पहले कितने गिरोह हलाक कर डाले तो (अज़ाब के वक्त) ये लोग चीख उठे मगर छुटकारे का वक्त ही न रहा था

4

وَعَجِبُوا ۚ أَنْ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِّنْهُمْ ۚ وَقَالَ الْكَافِرُونَ هَذَا سِحْرٌ ۚ كَذَّابٌ

और उन लोगों ने इस बात से ताज्जुब किया कि उन्हीं में का (अज्ञाबे खुदा से) एक डरानेवाला (पैग़म्बर) उनके पास आया और काफिर लोग कहने लगे कि ये तो बड़ा (खिलाड़ी) जादूगर और पक्का झूठा है

5

أَجْعَلِ آلَ اللَّهِ إِلَهًا ۚ وَحِدًا ۚ إِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ ۚ

भला (देखो तो) उसने तमाम माबूदों को (मटियामेट करके बस) एक ही माबूद कायम रखा ये तो यक़ीनी बड़ी ताज्जुब खेज़ बात है

6

وَأَنْطَلَقَ الْمَلَأُ مِنْهُمْ أَنْ آمَشُوا ۚ وَأَصْبَرُوا ۚ عَلَىٰ آلِهَتِكُمْ ۚ إِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ يُرَادُ

और उनमें से चन्द खादार लोग (मजलिस व अज्ञा से) ये (कह कर) चल खड़े हुए कि (यहाँ से) चल दो और अपने माबूदों की इबादत पर जमे रहो यक़ीनन इसमें (उसकी) कुछ ज़ाती गरज़ है

7

مَا سَمِعْنَا بِهَذَا فِي الْمِلَّةِ الْآخِرَةِ إِنْ هَذَا إِلَّا اخْتِلَافٌ

हम लोगों ने तो ये बात पिछले दीन में कभी सुनी भी नहीं हो न हो ये उसकी मन गढ़त है

8

أَنْزَلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْ ۚ بَيْنَنَا ۚ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ ۚ مِّنْ ذِكْرِي ۚ بَلْ لَّمَّا يَذُوقُوا ۚ عَذَابٍ

क्या हम सब लोगों में बस (मोहम्मद ही काबिल था कि) उस पर कुरान नाज़िल हुआ, नहीं बात ये है कि इनके (सिरे से) मेरे कलाम ही में शक है कि मेरा है या नहीं बल्कि असल ये है कि इन लोगों ने अभी तक अज्ञाब के मज़े नहीं चखे

9

أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَائِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيزِ الْوَهَّابِ

(इस वजह से ये शरारत है) (ऐ रसूल) तुम्हारे ज़बरदस्त फ़य्याज़ परवरदिगार के रहमत के खज़ाने इनके पास हैं

10

أَمْ لَهُمْ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ فَلْيَرْتَقُوا ۚ فِي الْأَسْبَابِ

या सारे आसमान व ज़मीन और उन दोनों के दरमियान की सलतनत इन्हीं की खास है तब इनको चाहिए कि रास्ते या सीढियाँ लगाकर (आसमान पर) चढ़ जाएँ और इन्तेज़ाम करें

11

جُنْدٌ ۚ مَا هُنَالِكَ مَهْزُومٌ ۚ مِّنَ الْأَحْزَابِ

(ऐ रसूल उन पैगम्बरों के साथ झगड़ने वाले) गिरोहों में से यहाँ तुम्हारे मुकाबले में भी एक लश्कर है जो शिकस्त खाएगा

12

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ ۚ وَعَادٌ ۚ وَفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَارِ

उनसे पहले नूह की क्रौम और आद और फिरऔन मेंखों वाला

13

وَتَمُودُ وَقَوْمُ لُوطٍ ۚ وَأَصْحَابُ لَيْكَةِ ۚ أُولَٰئِكَ الْأَحْزَابُ

और समूद और लूत की क्रौम और जंगल के रहने वाले (क्रौम शुऐब ये सब पैगम्बरों को) झुठला चुकी हैं यही वह गिरोह है

14

إِن كُلُّ إِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابُ

(जो शिकस्त खा चुके) सब ही ने तो पैगम्बरों को झुठलाया तो हमारा अज़ाब ठीक आ नाज़िल हुआ

15

وَمَا يَنْظُرُ هَٰؤُلَاءِ إِلَّا صَيْحَةً ۚ وَحِدَةً ۚ مَا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ ۚ

और ये (काफिर) लोग बस एक चिंघाड़ (सूर के मुन्तज़िर हैं जो फिर उन्हें) चश्में ज़दन की मोहलत न देगी

16

وَقَالُوا ۚ رَبَّنَا عَجِّلْ لَنَا قِطْنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ

और ये लोग (मज़ाक से) कहते हैं कि परवरदिगार हिसाब के दिन (क्रयामत के) क़बल ही (जो) हमारी किस्मत को लिखा (हो) हमें जल्दी दे दे

17

أَصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوُودَ ۚ ذَا الْأَيْدِ ۚ إِنَّهُ ۚ أَوَّابٌ

(ऐ रसूल) जैसी जैसी बातें ये लोग करते हैं उन पर सब्र करो और हमारे बन्दे दाऊद को याद करो जो बड़े कूवत वाले थे

18

إِنَّا سَخَرْنَا الْأَجْبَالَ مَعَهُ ۚ يُسَبِّحْنَ بِالْعِشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ

बेशक वह हमारी बारगाह में बड़े रूजू करने वाले थे हमने पहाड़ों को भी ताबेदार बना दिया था कि उनके साथ सुबह और शाम (खुदा की) तस्बीह करते थे

وَالطَّيْرَ مَحْشُورَةً ۚ كُلُّ لَهُ ۚ أَوَّابٌ ۚ

और परिन्दे भी (यादे खुदा के वक्त सिमट) आते और उनके फरमाबरदार थे

وَشَدَدْنَا مُلْكَهُ ۚ وَءَاتَيْنَاهُ الْحِكْمَةَ وَفَصَّلَ الْخِطَابِ

और हमने उनकी सत्तनत को मज़बूत कर दिया और हमने उनको हिकमत और बहस के फैसले की कूबत अता फरमायी थी

ۚ وَهَلْ أَتَاكَ نَبُؤًا ۚ الْخَصْمُ إِذْ تَسَوَّرُوا ۚ الْمِحْرَابَ

(ऐ रसूल) क्या तुम तक उन दावेदारों की भी खबर पहुँची है कि जब वह हुजरे (इबादत) की दीवार फाँद पड़े

إِذْ دَخَلُوا ۚ عَلَى دَاوُدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ ۚ قَالُوا ۚ لَا تَخَفْ ۚ خَصِمَانِ بَغَى بَعْضُنَا
عَلَى بَعْضٍ ۚ فَأَحْكُم بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَا إِلَى سَوَاءِ الصِّرَاطِ

(और) जब दाऊद के पास आ खड़े हुए तो वह उनसे डर गए उन लोगों ने कहा कि आप डरें नहीं (हम दोनों) एक मुकद्दमें के फ़रीकैन हैं कि हम में से एक ने दूसरे पर ज्यादाती की है तो आप हमारे दरमियान ठीक-ठीक फैसला कर दीजिए और इन्साफ से ने गुज़रिये और हमें सीधी राह दिखा दीजिए

إِنَّ هَذَا أَخِي لَهُ ۚ تِسْعٌ ۚ وَتِسْعُونَ نَعْجَةً ۚ وَلِيَ نَعْجَةً ۚ وَحِدَةً ۚ فَقَالَ أَكْفَلْنِيهَا
وَعَزَّنِي فِي الْخِطَابِ

(मुराद ये हैं कि) ये (शख्स) मेरा भाई है और उसके पास निनान्नेवे दुम्बियाँ हैं और मेरे पास सिर्फ एक दुम्बी है उस पर भी ये मुझसे कहता है कि ये दुम्बी भी मुझी को दे दें और बातचीत में मुझ पर सख्ती करता है

أَمْ نَجْعَلُ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا ۚ الصَّالِحَاتِ كَالْمُفْسِدِينَ فِي الْأَرْضِ أَمْ نَجْعَلُ
الْمُتَّقِينَ كَالْفُجَّارِ

क्या जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे-अच्छे काम किए उनको हम (उन लोगों के बराबर) कर दें जो रूए ज़मीन में फसाद फैलाया करते हैं या हम परहेज़गारों को मिसल बदकारों के बना दें

كُتِبَ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ مُبْرَكٌ ۚ لَيْدَبَّرُوا ۚ ءَايَاتِهِ ۚ وَلِيَتَذَكَّرَ أُولُو ۚ الْأَلْبَابِ

(ऐ रसूल) किताब (कुरान) जो हमने तुम्हारे पास नाज़िल की है (बड़ी) बरकत वाली है ताकि लोग इसकी आयतों में गौर करें और ताकि अक्ल वाले नसीहत हासिल करें

وَوَهَبْنَا لِدَاوُدَ ۚ دَ سُلَيْمَانَ ۚ نَعَمْ الْعَبْدُ ۚ إِنَّهُ ۚ أَوَّابٌ

और हमने दाऊद को सुलेमान (सा बेटा) अता किया (सुलेमान भी) क्या अच्छे बन्दे थे

إِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصُّفُفُ الْجِيَادِ

बेशक वह हमारी तरफ रूजू करने वाले थे इत्तोफाक़न एक दफ़ा तीसरे पहर को खासे के असील घोड़े उनके सामने पेश किए गए

فَقَالَ إِنِّي أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّي حَتَّى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ

तो देखने में उलझे के नवाफिल में देर हो गयी जब याद आया तो बोले कि मैंने अपने परवरदिगार की याद पर माल की उलफ़त को तरजीह दी यहाँ तक कि आफ़ताब (मगरिब के) पर्दे में छुप गया

رُدُّوْهَا عَلَيَّ ۚ فَطَفِقَ مَسْحًا ۚ بِالسُّوقِ وَالْأَعْنَاقِ

(तो बोले अच्छा) इन घोड़ों को मेरे पास वापस लाओ (जब आए) तो (देर के कफ़ारा में) घोड़ों की टाँगों और गर्दनों पर हाथ फेर (काट) ने लगे

وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمَانَ ۚ وَالْقَيْنَا عَلَى كُرْسِيِّهِ ۚ جَسَدًا ۚ ثُمَّ أَنَابَ

और हमने सुलेमान का इम्तेहान लिया और उनके तख्त पर एक बेजान धड़ लाकर गिरा दिया

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَهَبْ لِي مُلْكًا ۖ لَا يَنْزِلُ عَلَيَّ بَغْيٌ إِلَّا أَحَدٌ ۚ مِّنْ بَعْدِي ۚ إِنَّكَ أَنْتَ
الْوَهَّابُ

फिर (सुलेमान ने मेरी तरफ) रूजू की (और) कहा परवरदिगार मुझे बख्श दे और मुझे वह मुल्क अता फरमा जो मेरे बाद किसी के वास्ते शायँह न हो इसमें तो शक नहीं कि तू बड़ा बख्शने वाला है

فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيحَ تَجْرِي بِأَمْرِهِ ۖ رُخَاءً حَيْثُ أَصَابَ

तो हमने हवा को उनका ताबेए कर दिया कि जहाँ वह पहुँचना चाहते थे उनके हुक्म के मुताबिक धीमी चाल चलती थी

وَالشَّيَاطِينَ كُلَّ بَنَّاءٍ ۚ وَغَوَّاصٍ ۚ

और (इसी तरह) जितने शयातीन (देव) इमारत बनाने वाले और गोता लगाने वाले थे

وَأَخْرَيْنَ مُقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ

सबको (ताबेए कर दिया और इसके अलावा) दूसरे देवों को भी जो जंजीरों में जकड़े हुए थे

هَذَا عَطَاؤُنَا فَامْنُنْ أَوْ أَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۚ

ऐ सुलेमान ये हमारी बेहिसाब अता है पस (उसे लोगों को देकर) एहसान करो या (सब) अपने ही पास रखो

وَإِنَّ لَهُ ۖ عِنْدَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَّآبٍ ۚ

और इसमें शक नहीं कि सुलेमान की हमारी बारगाह में कुर्ब व मज्जेलत और उमदा जगह है

وَأَذْكُرْ عَبْدَنَا أَيُّوبَ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ ۖ أَنِّي مَسَّنِيَ الشَّيْطَانُ بِنُصْبٍ ۚ وَعَذَابٍ

और (ऐ रसूल) हमारे (खास) बन्दे अय्यूब को याद करो जब उन्होंने अपने परवरगार से फरियाद की कि मुझको शैतान ने बहुत अजीयत और तकलीफ पहुँचा रखी है

أَرْكُضْ بِرَجْلِكَ ۚ هَذَا مُغْتَسَلٌ بَارِدٌ ۖ وَشَرَابٌ ۚ

तो हमने कहा कि अपने पाँव से (ज़मीन को) ठुकरा दो और चश्मा निकाला तो हमने कहा (ऐ अय्यूब) तुम्हारे नहाने और पीने के वास्ते ये ठन्डा पानी (हाज़िर) है

وَوَهَبْنَا لَهُ ۖ أَهْلَهُ ۚ وَمِثْلَهُمْ مَعَهُمْ رَحْمَةً ۚ مِنَّا وَذِكْرَىٰ لِأُولَٰئِكَ ۚ إِلَىٰ الْأَلْبَابِ

और हमने उनको और उनके लड़के वाले और उनके साथ उतने ही और अपनी खास मेहरबानी से अता किए

وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا ۖ فَاضْرِبْ بِهِ ۚ وَلَا تَحْنُتْ ۚ إِنَّا وَجَدْنَاهُ صَابِرًا ۖ نِعْمَ الْعَبْدُ ۚ إِنَّهُ ۚ أَوَّابٌ ۚ

और अक्लमंदों के लिए इबरात व नसीहत (क्रार दी) और हमने कहा ऐ अय्यूब तुम अपने हाथ से सींको का मट्ठा लो (और उससे अपनी बीबी को) मारो अपनी क्रसम में झूठे न बनो हमने कहा अय्यूब को यकीनन साबिर पाया वह क्या अच्छे बन्दे थे

وَأَذْكُرْ عَبْدَنَا إِبْرَاهِيمَ ۖ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۖ أُولَٰئِكَ إِلَىٰ الْأَيْدِي وَالْأَبْصَارِ

बेशक वह हमारी बारगाह में बड़े झुकने वाले थे और (ऐ रसूल) हमारे बन्दों में इब्राहीम और इसहाक और बेशक वह (हमारी बारगाह में) बड़े झुकने वाले थे और (ऐ रसूल) हमारे बन्दों में इबराहीम और इसहाक और याकूब को याद करो जो कुवत और बसीरत वाले थे

إِنَّا أَخْلَصْنَاهُمْ بِخَالِصَةٍ ۚ ذِكْرَىٰ الدَّارِ

हमने उन लोगों को एक खास सिफत आखेरत की याद से मुमताज़ किया था

وَأِنَّهُمْ عِندَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْأَخْيَارِ

और इसमें शक नहीं कि ये लोग हमारी बारगाह में बरगुज़ीदा और नेक लोगों में हैं

وَأَذْكُرْ إِسْمَاعِيلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ۚ وَكُلٌّ ۚ مِّنَ الْأَخْيَارِ

और (ऐ रसूल) इस्माईल और अलयसा और जुलकिफल को (भी) याद करो और (ये) सब नेक बन्दों में हैं

هَذَا ذِكْرٌ ۙ وَإِنَّ لِلْمُتَّقِينَ لَحُسْنَ مَأْبٍ ۙ

ये एक नसीहत है और इसमें शक नहीं कि परहेज़गारों के लिए (आखेरत में) यक़ीनी अच्छी आरामगाह है

جَنَّتٍ عَدْنٍ ۙ مَّفْتَحَةٌ ۙ لَهُمُ الْأَبْوَابُ

(यानि) हमेशा रहने के (बेहिश्त के) सदाबहार बाग़ात जिनके दरवाज़े उनके लिए (बराबर) खुले होंगे

مُتَكِّينَ فِيهَا يَدْعُونَ فِيهَا بِفَكْهَةٍ ۙ كَثِيرَةٍ ۙ وَشَرَابٍ ۙ

और ये लोग वहाँ तकिये लगाए हुए (चैन से बैठे) होंगे वहाँ (खुद्दामे बेहिश्त से) कसरत से मेवे और शराब मँगवाएँगे

وَعِنْدَهُمْ قُصِرَتْ الطَّرْفُ الْأُتْرَابُ ۙ

और उनके पहलू में नीची नज़रों वाली (शरमीली) कमसिन बीवियाँ होगी

هَذَا مَا تُوْعَدُونَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ

(मोमिनों) ये वह चीज़ हैं जिनका हिसाब के दिन (क़यामत) के लिए तुमसे वायदा किया जाता है

إِنَّ هَذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهُ ۙ مِنْ نَفَادٍ

बेशक ये हमारी (दी हुई) रोज़ी है जो कभी तमाम न होगी

هَذَا ۙ وَإِنَّ لِلطُّغَيْنَ لَشَرَّ مَأْبٍ ۙ

ये परहेज़गारों का (अन्जाम) है और सरकशों का तो यक़ीनी बुरा ठिकाना है

جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا فَبِئْسَ الْمِهَادُ

जहन्नुम जिसमें उनको जाना पड़ेगा तो वह क्या बुरा ठिकाना है

57

هَذَا فَلْيَذُقُوهُ حَمِيمٌ ۚ وَغَسَّاقٌ ۚ

ये खौलता हुआ पानी और पीप और इस तरह अनवा अकसाम की दूसरी चीज़ें हैं

58

وَأَخْرَجْنَا مِنْ شَكْلِهِ ۚ أَزْوَاجٌ

तो ये लोग उन्हीं पड़े चखा करें (कुछ लोगों के बारे में) बड़ों से कहा जाएगा

59

هَذَا فَوْجٌ ۚ مُّقْتَحِمٌ ۚ مَّعَكُمْ ۚ لَا مَرْحَبًا ۚ بِهِمْ ۚ إِنَّهُمْ صَالُوا ۚ النَّارِ

ये (तुम्हारी चेलों की) फौज भी तुम्हारे साथ ही ढूँसी जाएगी उनका भला न हो ये सब भी दोज़ख को जाने वाले हैं

60

قَالُوا ۚ بَلْ أَنْتُمْ لَا مَرْحَبًا ۚ بِكُمْ ۚ أَنْتُمْ قَدَمْتُمُوهُ لَنَا ۚ فَبِئْسَ الْقَرَارُ

तो चले कहेंगे (हम क्यों) बल्कि तुम (जहन्नुमी हो) तुम्हारा ही भला न हो तो तुम ही लोगों ने तो इस (बला) से हमारा सामना करा दिया तो जहन्नुम भी क्या बुरी जगह है

61

قَالُوا ۚ رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هَذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ۚ أَوْ ضِعْفًا ۚ فِي النَّارِ

(फिर वह) अर्ज़ करेंगे परवरदिगार जिस शख्स ने हमारा इस (बला) से सामना करा दिया तो तू उस पर हमसे बढ़कर जहन्नुम में दो गुना अज़ाब कर

62

وَقَالُوا ۚ مَا لَنَا لَا نَرَىٰ رِجَالًا ۚ أَوْ كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِّنَ الْأَشْرَارِ

और (फिर) खुद भी कहेंगे हमें क्या हो गया है कि हम जिन लोगों को (दुनिया में) शरीर शुमार करते थे हम उनको यहाँ (दोज़ख) में नहीं देखते

63

أَتَّخَذْنَاهُمْ سِخْرِيًّا أَمْ زَاغَتْ عَنْهُمْ الْأَبْصَارُ

क्या हम उनसे (नाहक) मसखरापन करते थे या उनकी तरफ से (हमारी) आँखें पलट गयी हैं

إِنَّ ذَلِكَ لَحَقٌّ ۖ تَخَاصُمُ أَهْلِ النَّارِ

इसमें शक नहीं कि जहन्नुमियों का बाहम झगड़ना ये बिल्कुल यक़ीनी ठीक है

قُلْ إِنَّمَا أَنَا ۖ مُنْذِرٌ ۚ وَمَا مِنِّ إِلَهٍ إِلَّا اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं तो बस (अज़ाबे खुदा से) डराने वाला हूँ और यकता क़हार खुदा के सिवा कोई माबूद काबिले परसतिश नहीं

رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفُورُ

सारे आसमान और ज़मीन का और जो चीज़े उन दोनों के दरमियान हैं (सबका) परवरदिगार ग़ालिब बड़ा बख़्शने वाला है

قُلْ هُوَ نَبَأٌ عَظِيمٌ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ये (क़यामत) एक बहुत बड़ा वाक़िया है

أَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُونَ

जिससे तुम लोग (ख़्वाहमाख़्वाह) मुँह फेरते हो

مَا كَانَ لِي مِنِّ عِلْمٍ ۖ بِالْمَلَأِ الْأَعْلَىٰ إِذْ يَخْتَصِمُونَ

आलम बाला के रहने वाले (फरिश्ते) जब वाहम बहस करते थे उसकी मुझे भी ख़बर न थी

إِنْ يُوحَىٰ إِلَىٰ إِلَّا أَنَّمَا أَنَا ۖ نَذِيرٌ ۚ مُّبِينٌ

मेरे पास तो बस वही की गयी है कि मैं (खुदा के अज़ाब से) साफ-साफ़ डराने वाला हूँ

إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَأِكَةِ إِنِّي خَلِقُ ۖ بَشَرًا ۚ مِّنْ طِينٍ ۚ

(वह बहस ये थी कि) जब तुम्हारे परवरदिगार ने फरिश्तों से कहा कि मैं गीली मिट्टी से एक आदमी बनाने वाला हूँ

72

فَإِذَا سَوَّيْتُهُۥ ۖ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُّوحِي فَقَعُوا۟ لَهُۥ ۖ سَاجِدِينَ

तो जब मैं उसको दुरुस्त कर लूँ और इसमें अपनी (पैदा) की हुई रूह फूँक दो तो तुम सब के सब उसके सामने सजदे में गिर पड़ना

73

فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ

तो सब के सब कुल फरिश्तों ने सजदा किया

74

إِلَّا إِبْلِيسَ اسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ

मगर (एक) इबलीस ने कि वह शेखी में आ गया और काफिरों में हो गया

75

قَالَ يَٰٓإِبْلِيسُ مَا مَنَعَكَ أَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِإَيْدِي ۖ أَسْتَكْبَرْتَ ۖ أَمْ كُنْتَ مِنَ الْعَالِينَ

खुदा ने (इबलीस से) फरमाया कि ऐ इबलीस जिस चीज़ को मैंने अपनी खास कुदरत से पैदा किया (भला) उसको सजदा करने से तुझे किसी ने रोका क्या तूने तक्रबुर किया या वाकई तू बड़े दरजे वालों में है

76

قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۖ خَلَقْتَنِي مِنْ نَّارٍ ۖ وَخَلَقْتَهُۥ مِنْ طِينٍ

इबलीस बोल उठा कि मैं उससे बेहतर हूँ तूने मुझे आग से पैदा किया और इसको तूने गीली मिट्टी से पैदा किया

77

قَالَ فَأَخْرِجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَاجِعٌ

(कहाँ आग कहाँ मिट्टी) खुदा ने फरमाया कि तू यहाँ से निकल (दूर हो) तू यक़ीनी मरदूद है

78

وَإِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِي إِلَىٰ يَوْمِ الدِّينِ

और तुझ पर रोज़ जज़ा (क्रयामत) तक मेरी फिटकार पड़ा करेगी

قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ

शैतान ने अर्ज़ की परवरदिगार तू मुझे उस दिन तक की मोहलत अता कर जिसमें सब लोग (दोबारा) उठा खड़े किए जायेंगे

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ

फरमाया तुझे एक वक्त मुअय्यन के दिन तक की मोहलत दी गयी

إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ

वह बोला तेरी ही इज्जत व जलाल की कसम

قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ

उनमें से तेरे खालिस बन्दों के सिवा सब के सब को ज़रूर गुमराह करूँगा

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ

खुदा ने फरमाया तो (हम भी) हक़ बात (कहे देते हैं)

قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقُّ أَقُولُ

और मैं तो हक़ ही कहा करता हूँ

لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ

कि मैं तुझसे और जो लोग तेरी ताबेदारी करेंगे उन सब से जहन्नुम को ज़रूर भरूँगा

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं तो तुमसे न इस (तबलीग़े रिसालत) की मज़दूरी माँगता हूँ और न मैं (झूठ मूठ) बनावट करने वाला हूँ

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ ۖ لِلْعَالَمِينَ

ये (कुरान) तो बस सारे जहाँ के लिए नसीहत है

وَلَتَعْلَمَنَّ نَبَأُهُ ۖ بَعْدَ حِينٍ ۖ

और कुछ दिनों बाद तुमको इसकी हकीकत मालूम हो जाएगी

Az-Zumar

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ

(इस) किताब (कुरान) का नाज़िल करना उस खुदा की बारगाह से है जो (सब पर) ग़ालिब हिकमत वाला है

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ بِالْحَقِّ فَاْعْبُدِ اللَّهَ مُخْلِصًا ۖ لَهُ الدِّينَ

(ऐ रसूल) हमने किताब (कुरान) को बिल्कुल ठीक नाज़िल किया है तो तुम इबादत को उसी के लिए निरा खुरा करके खुदा की बन्दगी किया करो

أَلَا لِلَّهِ الدِّينُ الْخَالِصُ ۖ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا ۖ مِنْ دُونِهِ ۖ أَوْلِيَاءَ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا
إِلَى اللَّهِ زُلْفَىٰ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِي مَا هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ
هُوَ كَذِبٌ ۖ كَفَّارٌ ۖ

आगाह रहो कि इबादत तो खास खुदा ही के लिए है और जिन लोगों ने खुदा के सिवा (औरों को अपना) सरपरस्त बना रखा है और कहते हैं कि हम तो उनकी परसतिश सिर्फ़ इसलिए करते हैं कि ये लोग खुदा की बारगाह में हमारा तकर्रब बढ़ा देंगे इसमें शक नहीं कि जिस बात में ये लोग झगड़ते हैं (क्रियामत के दिन) खुदा उनके दरमियान इसमें फैसला कर देगा बेशक खुदा झूठे नाशुके को मंज़िले मकसूद तक नहीं पहुँचाया करता

4

لَوْ أَرَادَ اللَّهُ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا ۖ لَاصْطَفَىٰ مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ سُبْحَانَهُ ۚ ۚ هُوَ اللَّهُ
الْوَحِيدُ الْقَهَّارُ

अगर खुदा किसी को (अपना) बेटा बनाना चाहता तो अपने मखलूक़ात में से जिसे चाहता मुन्तख़िब कर लेता (मगर) वह तो उससे पाक व पाकीज़ा है वह तो यकता बड़ा ज़बरदस्त अल्लाह है

5

خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ ۚ يُكَوِّرُ اللَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى
اللَّيْلِ ۚ ۚ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۚ ۚ كُلٌّ ۚ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ ۚ أَلَا هُوَ الْعَزِيزُ
الْغَفُورُ

उसी ने सारे आसमान और ज़मीन को बजा (दुरूस्त) पैदा किया वही रात को दिन पर ऊपर तले लपेटता है और वही दिन को रात पर तह व तह लपेटता है और उसी ने आफ़ताब और महताब को अपने बस में कर लिया है कि ये सबके सब अपने (अपने) मुक़रर वक्त चलते रहेगें आगाह रहो कि वही ग़ालिब बड़ा बख़्शने वाला है

6

خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ ۚ ۚ وَحِدَةٍ ۚ ۚ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَانزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْأَنْعَامِ ثَمَنِيَّةَ
أَزْوَاجٍ ۚ ۚ يَخْلُقُكُمْ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ خَلْقًا ۚ ۚ مِّنْ ۚ بَعْدِ خَلْقٍ ۚ ۚ فِي ظُلُمَاتٍ ۚ ۚ
ثَلَاثٍ ۚ ۚ ۚ ذَلِكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۚ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ ۚ فَآَنَىٰ تُصْرَفُونَ

उसी ने तुम सबको एक ही शख्स से पैदा किया फिर उस (की बाक़ी मिट्टी) से उसकी बीबी (हौव्वा) को पैदा किया और उसी ने तुम्हारे लिए आठ क्रिस्म के चारपाए पैदा किए वही तुमको तुम्हारी माँओं के पेट में एक क्रिस्म की पैदाइश के बाद दूसरी क्रिस्म (नुत्फे जमा हुआ खून लोथड़ा) की पैदाइश से तेहरे तेहरे अंधेरों (पेट) रहम और झिल्ली में पैदा करता है वही अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार है उसी की बादशाही है उसके सिवा माबूद नहीं तो तुम लोग कहाँ फिरे जाते हो

إِنْ تَكْفُرُوا ۚ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ ۚ وَلَا يَرْضَىٰ لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَإِنْ تَشْكُرُوا ۚ يَرْضَهُ لَكُمْ ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۚ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُم مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ إِنَّهُ ۚ عَلِيمٌ ۚ بِذَاتِ الصُّدُورِ

अगर तुमने उसकी नाशुकी की तो (याद रखो कि) खुदा तुमसे बिल्कुल बेपरवाह है और अपने बन्दों से कुफ़्र और नाशुकी को पसन्द नहीं करता और अगर तुम शुक्र करोगे तो वह उसको तुम्हारे वास्ते पसन्द करता है और (क़यामत में) कोई किसी (के गुनाह) का बोझ (अपनी गर्दन पर) नहीं उठाएगा फिर तुमको अपने परवरदिगार की तरफ लौटना है तो (दुनिया में) जो कुछ (भला बुरा) करते थे वह तुम्हें बता देगा वह यकीनन दिलों के राज़ (तक) से खूब वाक़िफ है

ۚ وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ ۚ دَعَا رَبَّهُ ۚ مُنِيبًا إِلَيْهِ ۚ ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ ۚ نِعْمَةً ۚ مِنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوهُ ۚ إِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ أَنْدَادًا ۚ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيلِهِ ۚ ۚ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيلًا ۚ إِنَّكَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ

और आदमी (की हालत तो ये है कि) जब उसको कोई तकलीफ पहुँचती है तो उसी की तरफ रुजू करके अपने परवरदिगार से दुआ करता है (मगर) फिर जब खुदा अपनी तरफ से उसे नेअमत अता फ़रमा देता है तो जिस काम के लिए पहले उससे दुआ करता था उसे भुला देता है और बल्कि खुदा का शरीक बनाने लगता है ताकि (उस ज़रिए से और लोगों को भी) उसकी राह से गुमराह कर दे (ऐ रसूल ऐसे शख्स से) कह दो कि थोड़े दिनों और अपने कुफ़्र (की हालत) में चैन कर लो

أَمَّنْ هُوَ قَنِتٌ ءَانَاءَ اللَّيْلِ سَاجِدٌ ۚ وَقَائِمًا ۚ يَحْذَرُ آلَٰءَ آخِرَةٍ وَيَرْجُوا ۚ رَحْمَةَ رَبِّهِ ۚ ۚ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُو۟لُوا۟ ۚ الْأَلْبَابِ

(आखिर) तू यकीनी जहन्नुमियों में होगा क्या जो शख्स रात के अवक़ात में सज्जदा करके और खड़े-खड़े (खुदा की) इबादत करता हो और आखेरत से डरता हो अपने परवरदिगार की रहमत का उम्मीदवार हो (नाशुके) काफ़िर के बराबर हो सकता है (ऐ रसूल) तुम पूछो तो कि भला कहीं जानने वाले और न जाननेवाले लोग बराबर हो सकते हैं (मगर) नसीहत इबरतें तो बस अक़्लमन्द ही लोग मानते हैं

10

قُلْ يُعْبَادِ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ اتَّقُوا ۚ رَبَّكُمْ ۚ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا ۙ فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۚ ۙ وَأَرْضُ اللَّهِ وَسِعَةٌ ۚ إِنَّمَا يُوَفَّى الصَّابِرُونَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۚ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ मेरे ईमानदार बन्दों अपने परवरदिगार (ही) से डरते रहो (क्योंकि) जिन लोगों ने इस दुनिया में नेकी की उन्हीं के लिए (आखेरत में) भलाई है और खुदा की ज़मीन तो कुशादा है (जहाँ इबादत न कर सको उसे छोड़ दो) सब करने वालों ही की तो उनका भरपूर बेहिसाब बदला दिया जाएगा

11

قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ مُخْلِصًا ۙ لَهُ الدِّينَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मुझे तो ये हुक्म दिया गया है कि मैं इबादत को उसके लिए खास करके खुदा ही की बन्दगी करो

12

وَأُمِرْتُ لِأَنْ أَكُونَ أَوَّلَ الْمُسْلِمِينَ

और मुझे तो ये हुक्म दिया गया है कि मैं सबसे पहल मुसलमान हूँ

13

قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۚ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि अगर मैं अपने परवरदिगार की नाफरमानी करूँ तो मैं एक बड़ी (सख्त) दिन (क़यामत) के अज़ाब से डरता हूँ

14

قُلِ اللَّهُ أَعْبُدُ مُخْلِصًا ۙ لَهُ دِينِي

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं अपनी इबादत को उसी के वास्ते खालिस करके खुदा ही की बन्दगी करता हूँ (अब रहे तुम) तो उसके सिवा जिसको चाहो पूजो

15

فَاعْبُدُوا ۚ مَا شِئْتُمْ مِنْ دُونِهِ ۚ ۙ قُلْ إِنَّ الْخُسْرَيْنِ الَّذِينَ خَسِرُوا ۙ أَنْفُسَهُمْ وَأَهْلِيَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ ۙ أَلَا ذَلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि फिल हकीकत घाटे में वही लोग हैं जिन्होंने अपना और अपने लड़के वालों का क़यामत के दिन घाटा किया आगाह रहो कि सरीही (खुल्लम खुल्ला) घाटा यही है कि उनके लिए उनके ऊपर से आग ही के ओढ़ने होंगे

لَهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ ۚ مِّنَ النَّارِ وَمِن تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ۚ ۚ ذَٰلِكَ يُخَوِّفُ ٱللَّهُ بِهِ ۚ عِبَادَهُ ۚ ۚ يُعْبَادُونَ فَٱتَّقُوا

और उनके नीचे भी (आग ही के) बिछौने ये वह अज़ाब है जिससे खुदा अपने बन्दों को डराता है तो ऐ मेरे बन्दों मुझी से डरते रहो

وَالَّذِينَ أَجْتَنَبُوا ۚ ٱلطُّغُوتَ ٱنْ يَعْبُدُوهَا وَأَنَابُوا ۚ إِلَى ٱللَّهِ لَهُمُ ٱلْبُشْرَىٰ ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ

और जो लोग बुतों से उनके पूजने से बचे रहे और खुदा ही की तरफ रूजु की उनके लिए (जन्नत की) खुशखबरी है

ٱلَّذِينَ يَسْتَمِعُونَ ٱلْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ ۚ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ هَدَىٰ ٱللَّهُ ۚ وَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلرَّٰسِخُونَ ٱلْعِلْمِ ۚ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلَّذِينَ يَتَّبِعُونَ ٱلْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ ۚ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ هَدَىٰ ٱللَّهُ ۚ وَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلرَّٰسِخُونَ ٱلْعِلْمِ ۚ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلَّذِينَ يَتَّبِعُونَ ٱلْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ ۚ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ هَدَىٰ ٱللَّهُ ۚ وَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلرَّٰسِخُونَ ٱلْعِلْمِ ۚ ۚ

तो (ऐ रसूल) तुम मेरे (खास) बन्दों को खुशखबरी दे दो जो बात को जी लगाकर सुनते हैं और फिर उसमें से अच्छी बात पर अमल करते हैं यही वह लोग हैं जिनकी खुदा ने हिदायत की और यही लोग अक्लमन्द हैं

أَفَمَن حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ ٱلْعَذَابِ أَفَأَنتَ تُنقِذُ مَن فِى ٱلنَّارِ

तो (ऐ रसूल) भला जिस शख्स पर अज़ाब का वायदा पूरा हो चुका हो तो क्या तुम उस शख्स की खलासी दे सकते हो

لَكِنِ ٱلَّذِينَ ٱتَّقَوْا ۚ رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ ۚ مِّن فَوْقِهَا غُرَفٌ ۚ مَّبْنِيَّةٌ ۚ تَجْرِىٰ مِّن تَحْتِهَا ٱلْأَنْهَارُ ۚ وَعَدَ ٱللَّهُ ۚ لَا يُخْلِفُ ٱللَّهُ ٱلْمِيعَادَ

जो आग में (पड़ा) हो मगर जो लोग अपने परवरदिगार से डरते रहे उनके ऊँचे-ऊँचे महल हैं (और) बाला खानों पर बालाखाने बने हुए हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं ये खुदा का वायदा है (और) वायदा खिलाफी नहीं किया करता

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۖ فَسَلَكَهُ ۚ يَنْبِيعَ فِي الْأَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهِ ۚ
 زَرْعًا ۚ مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ۚ ثُمَّ يَهِيَجُ فترته مُصْفَرًّا ۚ ثُمَّ يَجْعَلُهُ ۚ حُطْمًا ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ
 لَذِكْرَىٰ لَأُولَ ۚ إِلَى الْأَلْبَابِ

क्या तुमने इस पर गौर नहीं किया कि खुदा ही ने आसमान से पानी बरसाया फिर उसको ज़मीन में चश्में बनाकर जारी किया फिर उसके ज़रिए से रंग बिरंग (के गल्ले) की खेती उगाता है फिर (पकने के बाद) सूख जाती है तो तुम को वह ज़र्द दिखायी देती है फिर खुदा उसे चूर-चूर भूसा कर देता है बेशक इसमें अक्लमन्दों के लिए (बड़ी) इबरत व नसीहत है

أَفَمَنْ شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ ۚ لِلْإِسْلَامِ فَهُوَ عَلَىٰ نُورٍ ۚ مِّن رَّبِّهِ ۚ ۚ فَوَيْلٌ ۚ لِلْقُصِيَّةِ
 قُلُوبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ ۚ أَوْ لَيْكَ فِي ضَلَالٍ ۚ مُّبِينٍ

तो क्या वह शख्स जिस के सीने को खुदा ने (कुबूल) इस्लाम के लिए कुशादा कर दिया है तो वह अपने परवरदिगार (की हिदायत) की रौशनी पर (चलता) है मगर गुमराहों के बराबर हो सकता है अफसोस तो उन लोगों पर है जिनके दिल खुदा की याद से (गाफ़िल होकर) सख्त हो गए हैं

اللَّهُ نَزَلَ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ كِتَابًا ۚ مُّتَشَبِّهًا ۚ مَّثَانِيَ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُودُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ
 رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلِينُ جُلُودُهُمْ وَقُلُوبُهُمْ إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ ۚ ذَلِكَ هُدَىٰ اللَّهِ يَهْدِي بِهِ ۚ مَن
 يَشَاءُ ۚ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ ۚ مِّنْ هَادٍ

ये लोग सरीही गुमराही में (पड़े) हैं खुदा ने बहुत ही अच्छा कलाम (यावी ये) किताब नाज़िल फरमाई (जिसकी आयतें) एक दूसरे से मिलती जुलती हैं और (एक बात कई-कई बार) दोहराई गयी है उसके सुनने से उन लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं जो अपने परवरदिगार से डरते हैं फिर उनके जिस्म नरम हो जाते हैं और उनके दिल खुदा की याद की तरफ बा इतमेनान मुतावज्जे हो जाते हैं ये खुदा की हिदायत है इसी से जिसकी चाहता है हिदायत करता है और खुदा जिसको गुमराही में छोड़ दे तो उसको कोई राह पर लाने वाला नहीं

أَفَمَن يَتَّقِ بِوَجْهِهِ ۚ سُوءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ ۚ وَقِيلَ لِلظَّالِمِينَ ذُوقُوا ۚ مَا كُنْتُمْ
 تَكْسِبُونَ

तो क्या जो शख्स क़यामत के दिन अपने मुँह को बड़े अज़ाब की सिपर बनाएगा (नाज़ी के बराबर हो सकता है) और ज़ालिमों से कहा जाएगा कि तुम (दुनिया में) जैसा कुछ करते थे अब उसके मज़े चखो

كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَآتَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ

जो लोग उनसे पहले गुज़र गए उन्होंने भी (पैग़म्बरों को) झुठलाया तो उन पर अज़ाब इस तरह आ पहुँचा कि उन्हें ख़बर भी न हुई

فَأَذَاقَهُمُ اللَّهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ

तो खुदा ने उन्हें (इसी) दुनिया की ज़िन्दगी में रूसवाई की लज्जत चखा दी और आख़िरत का अज़ाब तो यकीनी उससे कहीं बढ़कर है काश ये लोग ये बात जानते

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۚ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ

और हमने तो इस कुरान में लोगों के (समझाने के) वास्ते हर तरह की मिसाल बयान कर दी है ताकि ये लोग नसीहत हासिल करें

قُرْءَانًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِي عِوَجٍ ۚ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ

(हम ने तो साफ और सलीस) एक अरबी कुरान (नाज़िल किया) जिसमें ज़रा भी कजी (पेचीदगी) नहीं

ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا ۖ رَجُلًا ۖ فِيهِ شُرَكَاءُ مُتَشَكِّسُونَ وَرَجُلًا ۖ سَلَمًا ۖ لِرَجُلٍ هَلْ يَسْتَوِيَانِ مَثَلًا ۚ ۖ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ

ताकि ये लोग (समझकर) खुदा से डरे खुदा ने एक मिसाल बयान की है कि एक शख्स (गुलाम) है जिसमें कई झगड़ालू साझी हैं और एक ज़ालिम है कि पूरा एक शख्स का है उन दोनों की हालत यकसाँ हो सकती हैं (हरगिज़ नहीं) अल्हमदोलिल्लाह मगर उनमें अक्सर इतना भी नहीं जानते

إِنَّكَ مَيِّتٌ ۖ وَإِنَّهُمْ مَيِّتُونَ

(ऐ रसूल) बेशक तुम भी मरने वाले हो

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ

और ये लोग भी यक़ीनन मरने वाले हैं फिर तुम लोग क़यामत के दिन अपने परवरदिगार की बारगाह में बाहम झगड़ोगे